International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कामकाजी शिक्षित महिलाओं के बच्चों की सामाजिक गतिशीलता का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 (श्रीमती) साधना तोमर
विभागाध्यक्ष–समाजशास्त्र विभाग
शासकीय वी.आर.जी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)

मंजुल सिंह
अनुसंधात्री
एम.ए. (समाजशास्त्र)
एम.फिल.,नेट (यू.जी.सी.)

संक्षिप्तिकी

शिक्षित एवं सभ्य परिवार में बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ अच्छे आचरणों के तौर–तरीकों को सीखने का अच्छा अवसर मिलता है तथा इन परिवारों के बच्चे अधिक सभ्य तथा सुसंस्कृत होते हैं। इसके विपरीत अशिक्षित एवं असभ्य परिवार के बालकों को थोड़ी बहुत शिक्षा प्राप्त करने का अवसर भले ही प्राप्त हो जाए किन्तु उनमें सभ्य जीवन के लिये आवश्यक गुणों का विकास नहीं हो पाता। इस प्रकार बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में सामाजिक वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। कामकाजी महिलाएँ उच्च शिक्षित होतीं हैं। इस कारण अल्प समय में ही वे अपने बच्चों को उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकतीं हैं क्योंकि अभिभावक का किसी विशेष कार्य के प्रति दृष्टिकोण बच्चों को विशिष्ट कार्य के प्रति जागरूक बनाता है साथ ही बच्चों की यह जागरुकता समय पाकर उपलब्धि में परिवर्तित हो जाती है। इसी कारण से कामकाजी एवं घरेलू महिलाओं के बच्चों की उपलब्धियों में अंतर देखा जा सकता है। उच्च शिक्षित माता–पिता बच्चों के पालन–पोषण की उचित एवं उत्तम विधियों को अपनाते हैं, जिसका प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

मुख्य शब्द : गतिशीलता, कामकाजी, शिक्षित, महिलाएं, बच्चे।

भूमिका

सभ्यता और संस्कृति के निर्माण एवं प्रचार–प्रसार में महिलाओं ने अतुलनीय योगदान दिया है। भारतीय मनीषियों के चिंतन में एक संस्कारवान व योग्य पुत्र का निर्माण भी सामाजिक निर्माण की दार्शनिक व्याख्या की दृष्टि से इस क्षेत्र में अमूल्य योगदान है। नारी का कार्य परिवार को सुदृढ़ बनाना तथा समाज को सुयोग्य व संस्कारवान संतति देना था। चूँकि माँ बालक की प्रथम शिक्षिका होती है, इस दृष्टि से उसके सहयोग को नकारा नहीं जा सकता। इस हेतु माँ को शिक्षित व जागरुक होना भी नितान्त आवश्यक है।[1]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

''ज्ञान के क्षेत्र में महिलाएँ अनादि काल से ही पुरूषों के समान सहभागी रहीं हैं। अनेक वेदमंत्रों के अवतरण में ऋषियों का ही नहीं ऋषिकाओं यथा विश्वारा, गोधा, अपाला, घोषा तथा सची आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सर्वोच्च सप्तऋषि पद में अरुंधती को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। शास्त्रों में यदि ब्रह्मा के तीन रूप ब्रह्मा, विष्णु, महेश माने जाते हैं, तो वहीं आदि शक्ति के भी तीन रूप महा–सरस्वती, महालक्ष्मी तथा महाकाली को माना जाता है। इस प्रकार यह सर्वसत्य है, कि ज्ञान के क्षेत्र में नारी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।''[2]

स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग 75 वर्षों में महिलाओं की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। आज महिलाएँ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक दासता से निकलकर स्वतन्त्र जीवन का विकास करने की सभी सुविधाएँ प्राप्त कर रहीं हैं। सामाजिक एवं आर्थिक विकास महिलाओं की सहभागिता के बिना संभव नहीं है। समाज में गुणात्मक परिवर्तन महिलाओं की स्थिति एवं गुणों में सुधार से ही संभव है। मानवीय दशा तभी श्रेष्ठ बन सकती है, जब इसके निर्माण में महिलाओं का योगदान मिले और इस उन्नयन का समान लाभ भी उन्हें प्राप्त हो। "महिलाएँ अपने पारम्परिक कर्तव्यों के निष्पादन के समय प्राकृतिक वातावरण के अति निकट होती हैं, परिणामस्वरूप उन्हें संसाधनों का मौलिक ज्ञान होता है।"[3]

''माता ही पुत्र की सच्ची गुरू है, वही उसके जीवन की सच्ची आधारशिला है। आज मनोवैज्ञानिक भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि गर्भस्थ बालक पर माता के स्वभाव, आचरण एवं विचारों का जो प्रभाव पड़ता है, वह बालक के सम्पूर्ण जीवन का आधार होता है।''[4]

कामकाजी महिलाएं

समाज के विकास में महिलाओं की भूमिका अब पुरुषों से कम नहीं है। जितने हाथों को काम मिला है, प्रगति की गति उतनी ही तेज हुई है, लेकिन पुरुषों की अपेक्षा कामकाजी महिलाओं के दायित्व पहले से बहुत अधिक बढ़ गए हैं। घर की दुनियाँ आज भी महिलाओं के बिना सूनी है। मातृत्त्व की जिम्मेदारी अपने–आप में एक चुनौती भरा काम है। अपनी शिक्षा, नौकरी, विवाह और मातृत्त्व प्राप्ति के बाद माता को बच्चों के सुन्दर भविष्य की तैयारी करनी पड़ती है। यदि शिक्षित कामकाजी महिलाएँ बच्चों के अभ्युदय के लिए हर पल सजग हों तो बच्चों के साथ–साथ स्वयं उनके विकास का भी नया रास्ता खुलता है।

कामकाजी महिलाओं की दिनचर्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अपने बच्चों से अलग एक ऐसी जगह व्यतीत होता है, जहाँ भिन्न–भिन्न विचारधारा के स्त्री पुरुष मिलते हैं। वहाँ सबके साथ प्रेम और सद्भावपूर्ण वातावरण के साथ सामंजस्य बनाए रखना जरूरी हो जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शिक्षित कामकाजी महिलाओं के जीवन की सफलता को मापने के तीन बिन्दु हैं : प्रथम – उनकी गृहस्थी कितनी व्यवस्थित और सुचारु रूप से चलती है, द्वितीय – वे अपनी नौकरी के प्रति कितनी समर्पित हैं, तथा तृतीय – अपने बच्चों के जीवन के प्रति वे कितनी सजग हैं। ये तीनों ही बिन्दु एक–दूसरे की पूर्ति करने वाले हैं। सुव्यवस्थित घर के बच्चे न केवल सुव्यवस्थित होते हैं, बल्कि वे सम्पूर्ण घर की अभिव्यक्ति होते हैं।[5]

बच्चों के जीवन में माँ की भूमिका

बच्चों के चहुंमुखी विकास के लिए माँ और उसके ममत्व का कितना महत्व है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि गुरुकुल से विदाई के समय श्रीकृष्ण ने अपने गुरू से यह वरदान मांगा था कि 'मुझे जीवन पर्यन्त अपनी माँ के हाथ का भोजन मिले' अर्थात मातृ–वियोग न सहन करना पड़े। इस सच्चाई के विपरीत आज कामकाजी महिलाओं के बच्चे तो उनके ममत्व की छाया से दूर शिशु–सदनों अथवा नौकर–नौकरानियों की गोद में होश संभालते हैं। जिस प्रकार धरती से पाँव उखड़ जाने पर मानव के पाँव लड़खड़ा जाते हैं, उसी प्रकार माँ के वात्सल्य से वंचित इन बच्चों का सर्वांगीण विकास असंभव है।

19वीं सदी तक की महिलाएँ घर की चार–दीवारी तक ही सीमित रहीं और अपनी सम्पूर्ण क्षमता का सदुपयोग अपने बच्चों तथा परिवार की सुख–समृद्धि के लिए करतीं रहीं, परन्तु आज की कामकाजी महिलाओं का कार्य–क्षेत्र विस्तृत हो गया है। वह जीविकोपार्जन के लिए घरेलू नौकरियों से लेकर सर्वोच्च पदों पर कार्यरत हैं। चाहे निजी संस्थान हों या सार्वजनिक, सरकारी विभाग हों अथवा सैन्य सेवाएँ सर्वत्र महिलाओं का योगदान है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की इस भागीदारी ने उन्हें आत्मनिर्भर तथा स्वावलम्बी तो बनाया है परन्तु परिवार का भौतिक स्तर यदि उन्नत हुआ है तो पारिवारिक जीवन तथा उनके वात्सल्य में गिरावट भी आयी है। वातावरण की छाया मानव तथा उसके परिवार पर भी पड़ती है। तनावपूर्ण जीवन जीने वाली महिला अपने परिवार को तनावमुक्त रखने में असफल रहती है। घरेलू नौकरानियों की प्रताड़ना, अन्य पदों पर कार्यरत महिलाओं की मानसिक उलझन तथा घर व पदाधिकारियों की गुलामी कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जिनमें फंसकर महिलाएँ अपना असली आत्मिक सौन्दर्य खो कर नौकरी तथा परिवार के चक्रव्यूह में फंस गईं हैं। इन परिस्थितियों में बच्चे तथा परिवार के दायित्व–निर्वाह में कहीं न कहीं कमी तो आनी ही है और इसका सबसे अधिक कुप्रभाव बच्चों पर पड़ा है।

प्रत्येक माँ अपने बच्चे को लाड़–प्यार देना चाहती है परन्तु आज के युग में केवल लाड़–प्यार से काम नहीं चलता। बच्चों की शिक्षा, पोशाक और सुख सुविधाएँ भी आज की अनिवार्य आवश्यकताएं बन गईं हैं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पति–पत्नी दोनों को नौकरी करनी पड़ रही है। उच्च–वर्गीय एवं प्रतिष्ठित पदों पर आसीन महिलाओं द्वारा इस क्षतिपूर्ति का प्रयास घरेलू

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नौकर– नौकरानियों से किया जा रहा है तो मध्यम–वर्गीय महिलाएँ अपने बच्चों के लिए शिशु–सदनों अथवा अंशकालिक आयाओं की शरण में जा रहीं हैं। जो अपरिपक्व तथा अनुभवहीन होने के कारण बच्चों की सही देखभाल नहीं कर पातीं।

नौकरी–पेशा महिलाओं के बच्चे समय से पूर्व ही परिपक्व हो जाते हैं, कारण उनका यही है कि कुछ परिवारों को छोड़कर अधिकांश परिवारों के बच्चे जब माँ को दिन–रात कोल्हू के बैल की तरह कार्य करते देखते हैं तो उनके मन में माँ की सहायता की भावना बलबती होती है और धीरे–धीरे वे अपना कार्य स्वयं करने लग जाते हैं। इससे उनमें स्वावलंबन की भावना जागृत होती है।[6]

सच्चाई यह है कि घरेलू महिला के पास जितने प्यार, अपनत्व एवं ममत्त्व के अवसर हैं उतने कार्यरत महिला के पास नहीं। वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व पर संतोष नहीं कर सकतीं हैं परन्तु बच्चों में जिस सामाजिकता एवं कर्तव्य बोध की आशा की जाती है उसका उनमें सर्वथा अभाव होता जा रहा है। उनके जीवन का लक्ष्य भी परीक्षाओं में अच्छे अंकार्जन कर नौकरी प्राप्त करना और येन–केन प्रकारेण धनोपार्जन करना ही रह गया है। अपनी संस्कृति से दूर ये बच्चे भौतिक सभ्यता की अंधी दौड़ में शामिल हो रहे हैं और माता–पिता के पास इतना अवकाश ही नहीं है कि उन्हें सही दशा दे सकें। त्याग, ममता, करुणा, दया, मानवता आदि के पाठ माँ ही पढ़ा सकती है। जिनकी आवश्यकता आज विश्व को सबसे अधिक है।[7]

आधुनिक माताएं

आज की स्त्री की स्थिति लगातार बदलती, नए–नए मोड़ लेती, नई–नई दिशाओं की तरफ करवट लेने लगी है। हर स्त्री की पीड़ा अलग–अलग है, क्योंकि हर स्त्री की परिवारिक स्थितियाँ अलग–अलग हैं। अपने परिवार में बेटी के रूप में समादृत स्त्री शादी के बाद अच्छी बहू के रूप में रूपांतरित हो, इसके लिए उस पर तमाम कहे–अनकहे घरेलू दबाब डाले जाते हैं। बेशक आज के ज्यादातर मामलों में स्त्री को परम्परागत जकड़बंदी से काफी हद तक मुक्ति मिलने लगी है, लेकिन यहाँ भी विसंगतियां देखने को मिल जायेंगीं। मनगढ़ंत किस्से नहीं बल्कि आज की हकीकत ये है कि ससुराल में बहू जब दफ्तर से घर लौटकर आएगी तो ज्यादातर मामलों में उसे खुद चाय बनाने के लिए उठना पड़ेगा, लेकिन वही लड़की जब दफ्तर के बाद अपनी माँ के पास लौटेगी तो माँ चाय की प्याली लिए उसके पास खुद व खुद खड़ी होगी। ये कैसा विचित्र मनोविज्ञान है ? स्त्री–पुरुष के बीच अब भी भेदभाव की कितनी गहरी खाई है, जिसे मिटाने की स्त्री आकांक्षा न जाने कब और कैसे पूरी होगी ?[8]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नारी केवल माता है, और उसके उपरान्त वह जो कुछ है सब मातृत्त्व का उपक्रम मात्र है। मातृत्त्व संसार की सबसे बड़ी साधना, सबसे बड़ी तपस्या, सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान् विषय है। एक शब्द में उसे यह कहूँगा कि ''जीवन का, व्यक्तित्व का और नारीत्त्व का भी''।[9]

निष्कर्ष

शिक्षित एवं सभ्य परिवार में बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ अच्छे आचरणों के तौर–तरीकों को सीखने का अच्छा अवसर मिलता है तथा इन परिवारों के बच्चे अधिक सभ्य तथा सुसंस्कृत होते हैं। इसके विपरीत अशिक्षित एवं असभ्य परिवार के बालकों को थोड़ी बहुत शिक्षा प्राप्त करने का अवसर भले ही प्राप्त हो जाए किन्तु उनमें सभ्य जीवन के लिये आवश्यक गुणों का विकास उतना नहीं हो पाता जितना कि उच्च शिक्षित कामकाजी महिलाओं के बच्चों का, क्योंकि अवसरों की आवश्यक उपलब्धता में अन्तर होता है। इस प्रकार बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में सामाजिक वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है।

बच्चों की उपलब्धियों में माता का योगदान – बच्चे की प्रथम पाठशाला उसकी माँ होती है। जो प्रारंभिक शैक्षिक सीख अपने बच्चों को प्रदान करती है। शैक्षिक वातावरण का अनुभव उसके परिवार के माध्यम से खेल–खेल में, खाने–पीने में, चलने–फिरने में, उठने–बैठने में, बोलने–चालने में, कपड़े पहनने में इत्यादि के माध्यम से प्राप्त होते हैं। ये अनुभव उसे शैशवावस्था में ही समाजीकरण की प्रक्रिया से प्राप्त होना प्रारम्भ हो जाते हैं। अधिकांशतः सामाजीकरण की प्रक्रिया में माताएं यह नहीं जानतीं कि वे बच्चों के आचरण को पूरी तरह से प्रभावित कर रहीं हैं। सामान्यतया जो प्रशिक्षण बच्चों को औपचारिक रूप से दिया जाता है, वह उतना प्रभावशाली नहीं हो पाता जितना कि अनौपचारिक रूप से दिया जाने वाला प्रशिक्षण प्रभावशाली होता है। जिससे कि शिक्षित कामकाजी महिलाओं के बच्चे अपेक्षाकृत सामान्य महिलाओं के बच्चों से प्रत्येक क्षेत्र में जल्द प्रगति कर लेते हैं।

''परिवार की सामाजिक स्थिति भी व्यक्तित्व का निर्धारण करती है। सन् 1930 में व्यक्तित्व और प्रत्यक्षीकरण के मनौवैज्ञानिक अध्ययन में एक नई क्रांति आई कि प्रत्यक्षीकरण पर आवष्सयक वचन का गहरा प्रभाव पड़ता है और इसके कारण व्यक्तित्व भी प्रभावित होता है। गरीब और अमीर बच्चों पर जो भी अध्ययन किए गए हैं उससे स्पष्ट होता है कि गरीब परिवार के बच्चे ज्यादा ईर्ष्यालु होते हैं और सम्पन्न परिवार के बच्चों का व्यक्तित्व विकास अधिक संतुलित होता है।''[10]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह मंजुल, लघु शोध प्रबन्ध (एम. फिल. 2009), *कार्यरत शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन,* पृ. 7।
2. अग्रवाल डॉ. शारदा : *आधी आबादी का यर्थाथ भारतीय नारी,* 2010, राधा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ.सं. 181।
3. वही, पृ.सं. 182।
4. चौरड़िया, दिलीप सिंह : आदर्श माताएं, 2012, दीक्षा पब्लिकेशन्स जयपुर पृ.सं. 53।
5. अग्रवाल जी.के., *भारत में समाज,* पृ.सं. 123।
6. सिंह अनुपम, 2011, *महिला सशक्तिकरण के अधिनियम का सामाजिक चेतना पर प्रभाव,* शोध प्रबंध, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, पृ. 27।
7. Darroh Meyer and Smiagani "*Current studies on value of children*".
8. Susan Devan "*The old age economic security of children in phillpinss and Taiwan*."
9. समाचार पत्र (ग्वालियर) *नई दुनिया, नायिका विचार,* बुधवार, 22 अप्रैल 2015, पृ. 8।
10. कुमारी आशा : सामाजिक परिवेश में बाल विकास, 2005, क्लासिकल पब्लिकेशंस कम्पनी, नई दिल्ली, पृ.सं. 03।